P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-II*October-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

बारेला जनजाति पर्व एवं उत्सव लोक साहित्य के संदर्भ में

सेवन्ती डावर
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
खरगोन।

सारांश

बारेला जनजाति में प्रचलित पर्व उत्सव प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं, इस समाज की परम्परा व रिवाज केवल मौखिक रूप में जिव्हा पर जीवित हैं जिसे लिपिबद्ध कर संग्रहित करने का प्रयास किया गया हैं।

मुख्य शब्द : लोक–संस्कृति, पर्व–त्यौहार, आदिवासी समाज, दित्वार्या, दिवासा

प्रस्तावना

बारेला जनजाति में अन्य जनजाति के समरूप ही पर्व, उत्सव एवं त्यौहार मनाये जाते है। जनमानस में ईश्वर के प्रति निष्ठा पैदा करने एवं इस निष्ठा को सतत् जारी रखने मे पर्वो का अत्यत महत्व है। साथ ही पर्व मनोरंजन के चिरन्तन स्त्रोत है इनका महत्व यहीं तक सीमित नहीं है। इनसे सामाजिक संगठन में दृढ़ता आती है तथा सामुदायिक भावना बलवती होती है। पर्व–उत्सव संस्कृति 'सम्पक एवं संस्कृति प्रसार को भी सम्भव बनाते है।

पर्व–त्यौहार लोक संस्कृति के अभिन्न अंग है। मानव जीवन में वर्ष के माह का कोई दिन ऐसा नहीं होता, जब कोई न कोई पर्व–त्यौहार न आते हो। भारतीय जीवन को प्रतिदिन पर्व–उत्सव–त्यौहर करे केन्द्र में रखकर हमारे ही दष्टा–ऋषियों ने समय की अनन्तता में कुछ इस तरह बांध दिया है कि मनुष्य हर क्षण अपने अवसर को भुलकर आनंद में रह सके, क्योंकि जीवन का मूल मंत्र आनंद है। पर्व–त्यौहार के स्वरूप आनंद उत्साह के लिये गढ़े गये है। सामाजिक, धार्मिक और आनुष्ठानिक विश्वासों की अभिव्यक्ति के रूप में पर्व–त्यौहारों को लोक परम्पराओं और प्रथाओं ये सूत्र बद्ध किया गया है। पर्व–त्यौहार मनाने के अवसर एक दूसरों को नजदीक आने का आमंत्रण देते है। एक–दूसरे के सुख–दुःख में शामिल होने के अवसर प्रदान करते है। पर्व–त्यौहार जहाँ उमंग–उत्साह से भर देते है वही जीने की नई प्रेरणाएँ भी प्रदान करते हैं।

हमारा देश त्यौहारों का देश माना जाता है यहां पर निवास कराने वाला कोई भी व्यक्ति वह किसी भी धर्म समुदाय का हो, वह प्रत्येक महीने कोई–न कोई त्यौहार मनाया जाता है। उसी प्रकार आदिवासी समाज में वर्षा प्रारंभ होने के साथ ही पर्व–उत्सव–त्यौहार का सिलसिला शुरू हो जाता है।

दितवारया पव

बारला समुदाय में वर्षा आगमन के साथ मनाया जाने वाला पहला पर्व 'दितवारिया' है। दितवारिया दो शब्द से मिलकर बना है। 'दित' का अर्थ है, 'दीपक' या 'दीया' और 'वारया' का अर्थ है 'वार' या 'दिवस' दिन' से लिया जाता है। गाँव में इसका दूसरा सामान्यतः अर्थ दितवारया से रविवार क दिन से लिया जाता है अर्थात रविवार के दिन मनाने वाला पर्व। दितवारया दो दिन तक मनाया जाता है। पहला रविवार के दिन तथा मंगलवार को ।

गाँव का पटेल व बड़वा पुजार, गाँव डाहला आदि प्रमुख वरिष्ठजन तय करते है कि दितवारिया कब मनाया जायें। यह पर्व बुवाई होने के पश्चात लगभग गाँव में फसल उग आने पर मनाया जाता है। दितवारिया का सदंश गाँव के कोटवार द्वारा घर–घर पहुचाया जाता है। कोटवार संदेश देने के साथ–साथ प्रत्येक घर से जुवार के दाने व उड़द एक–एक मुठठी एकत्रित किए जाती है। एकत्रित दानों को विधि–विधान पूर्वक पटेल व अन्य व्यक्तिया द्वारा घिसरी व गाँव खेड़ा बाबदेव के समक्ष भार वाले (सतवाले) किए जाते है। सतवाले दानों के पिछे इस समुदाय में यह धारणा है कि वर्ष की शुरूआत से अन्त तक गाँव की सम्पत्ति अर्थात धन–धान, पशु–पक्षी, बाल–बच्चे एवं अन्य सभी निरोग व कष्ट मुक्त रहें। इस दृष्टि से दाने पूजे जाते है। दितवारया के दिन दानों को पुनः वापस प्रत्येक घर–घर लौटा दिए जाते है। घर की महिलाएँ इन दानों को छोटे–छाटे चिंदे में डालकर पोटली बनाते है। परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए सिली जाती है। सभी को कमर या भुजा में बाँधना अनिवार्य होता है। दितवारया के दिन मक्का या गेहूं की घाट या दाल–चावल घर के

आँगन में बनाया जाता है। प्रातः सूर्य निकलने के पहले भोर समय में प्रत्येक खेत में बाँस की लकड़ी जूता, मटका, मटकी आदि लगायी जाती है। आम के पत्ते, मिर्ची व प्याज की मालाएँ बनाकर प्रत्येक दरवाजे एव खिड़कियों पर लगाया जाता ह। पलाश के पत्तों म घिनसरी व चुल्हे के समीप पकाए चावल व गुड़, तेल आदि रखा जाता है। अंत में भोजन किया जाता है।

दिवासा उत्सव

वर्षा प्रारंभ होते ही बारेला जनजाति के लोग श्रावण मास की अमावस्या को प्रसन्न करने के लिए दिवासा मनाते है। बाबदेव को ही बाबदव कहा जाता है। पश्चिम निमाड़ के बरला बहुल ग्रामीण क्षेत्र मे दितवारया के पश्चात दिवासा उत्सव मनाया जाता है। भील, भिलाला व बारेला समुदाय इस त्यौहार को अलग–अलग दिन मनाने का रिवाज रहा है।

दिवासा पर्व अन्य पर्वो की अपेक्षा महत्वपूर्ण व अनिवार्य होता है। जिसमें ''बाबदेव'' को नया गोबर, गाय का दध, नये घास की पिंडी (पुटवा) चढायी न जाती है जब तक कि इसका उपयोग नहीं किया जाता है।

दिवासा पर्व पर गाँव के पटेल व पुजारा बड़ा आदि व्यक्तियों द्वारा विचार किया जाता है इस सम्बध में गाँव चौकोदार (कोटवार) को बुलवाकर 'दिवासा' मनाने को दिन निश्चित करने के लिए पटेल के घर पर एक बैठक का आयोजन किया जाता है। बैठक में बजूर्गो की सर्व सहमति से दिन निश्चित किया जाता है। सभी के सहमति होने पर बैठक में फावेवणी (धनराशि) भी निश्चित की जाती है। यह प्रत्येक खाते पर निश्चित होती है। फावेवणी वसूलने व दिवासा की सूचना देने के लिए प्रत्येक घर कोटवार जाता है। जो राशि एकत्रित की जाती है उस राशि स ''बाबदेव'' की पूजा की सामग्री क्रय की जाती है। सामग्री क्रय के लिए गाँव के मुखिया व गाँव डाहला ,पुजारा, बड़वा की समिति बनाई जाती है कभी–कभी मन्नत के अनुसार गाँव का कोई भी व्यक्ति बकरे की बलि चढ़ाते है अन्यथा फावेवणी की राशि से ही बकरा खरीदा जाता है।

दिवासा पर्व मनाने की रीति

दिवासा पर्व दो दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन को घरे (शब्द से जाना जाता है) के दिन घरों की सफाई व नये गोबर से लिपाई की जाती है। घर के दिन शाम (रात भर) से दूसरे दिन तक गायना किया जाता है। गायणे में बाजे के रूप में ढाक (डमरू) का प्रयोग किया जाता है। जिसे दिवासा से नवाई पर्व तक बजाया जाता है। ढाक को बजाने के लिए सनाई की रस्सी से तैयार किया जाता है उसे पंजा व घुटनों में लगाकर बांस की लकड़ी से बजाया जाता है। बायणे में पुजारा, पटेल व अन्य गायक गाने के लिए बुलाये जाते है। रात–भर गाँव की जनता की सुख–शांति की कामना के लिए 'गायणा' गाया जाता है।

बाबदेव की पूजा

आदिवसी बारेला समुदाय में बाबदेव को अग्रणी देवता माना जाता है और सबसे पहले पूजा भी इन्ही की जाती है। नये वर्ष की शरूआत बाबदेव को पूजा की जाती है। पूजा के लिए सामग्री पूजारी द्वारा एकत्रित कर विधि –विधान पूर्वक पूजा सम्पन्न की जाती है।

इस पूजा में प्रत्येक घर से ज्वार च कच्चा दध एक व्यक्ति को घर से ज्वार व कच्चा दूध एक व्यक्ति को लेकर जाना अनविार्य होता है। दूध केवल गाय का होना अनिवार्य है। दूध व पानी में ज्वार की घाट बनाई जाती है। बाबदेव से 15–20 मीटर की दूरी पर पूर्व दिशा में रख दता है। उसके पश्चात सभी को प्रसाद वितरण किया जाता है। दूरी पर रखा प्रसाद खाने के लिए ऐलान किया जाता है, वह भाग कर जो पुड़िया लेकर भागना चाहता है, वह भाग सकता है। पुड़ियां लेकर भागने वालों को पत्थर मारे जाते है। भागने वाले बचाव करते हुए जाकर दूर प्रसाद खाते है। प्रसाद के पश्चात बकरे की बलि चढ़ाई जाती है सभी को प्रसाद वितरण किया जाता है।

दिवासा का दूसरे दिन विशेष होता है। बाबदेव की पूजा उपयुक्त अनुसार दिवासा की दिन सुबह 4–5 बजे से कार्य सम्पन्न होता है। बाबदेव का प्रसाद आने तक घर की साफ–सफाई कर ली जाती है। दिवास के सुबह दाल–चावल पकाएँ जाते हैं। दिवासा के दिन भर मेहमानों के आने का सिलसिला शरू हो जाता है।

परिवार की प्रमुख महिला 'वास नाखणों' के लिए शद्धता के साथ भोजन पकाती है। अन्य महिलाएँ उसका सहयोग करती है। मीठी पूड़ी, भजिए ,मीठे उड़द के बड़े ,गेहूं के ताय, दाल–चावल आदि पकवान बनाए जाते ह। इन पकवानों जब तक कुल देवी घिनसरी व वास न रखा जाये तब तक भोजन नहीं किया जाता है। वास डालते समय सभी भोजन को पलाश के पत्तें पर रखा जाता है। एक पत्ता घिनसरी एक पत्ता अग्निदेव (चुल्हा) तथा पाँच पत्तें सुपड़े में रखकर उहकी में शद्ध जल से घर के प्रमुख सदस्य पति–पत्नी द्वारा पूजा की जाती है।

वास नाखणे की विधि

रसोई कमरे से सुपड़ा को पुरुष लेकर चलता है और उसके पीछे महिला हाथ में उईकी लेकर पानी से हाथ धुलवाती है। दाँये हाथ से तीन बार एवं बाँये हाथ से दो बार खाना छत पर डाला जाता है। खाना देने के बाद उतनी बार पानी छत पर डाला जाता है। वास एवं भोग देने क पश्चात सभी मेहमानों और घर के सदस्यों को खाना खिलाया जाता है। रात्रि को युवा वर्ग नाच–गान (गरबा) चलता रहता है

संदर्भ सूची

1. लोक साहित्य की भूमिका – कृष्णदेव उपाध्याय , साहित्य भवन इलाहाबाद ।
2. म. प्र. की जनजातियॉ – डॉ. शिव कुमार तिवारी, म. प्र.हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल ।